सामाजिक मीडिया का भाषा पर प्रभाव

पल्लवी

सहायक प्राध्यापिका, द येनेपोया कॉलेज, तोडार, मूडबिद्री

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18790904

ABSTRACT:

आजकल सामाजिक मीडिया ने मानव संचार को पूरी तरह बदल दिया है। यूट्यूब, फेसबुक, व्हाट्सऐप, इंस्टाग्राम, ट्विटर और एक्स (ट्विटर) जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स ने भाषा के रूप, स्वरूप और प्रयोग में काफी बदलाव किया है। हिंदी भाषा भी इस बदलाव से प्रभावित हुई है। हिंदी में सामाजिक मीडिया के प्रभाव से संक्षिप्तता, अनौपचारिकता, नई शब्दावली, मिश्रित भाषा (इंग्लिश) और प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियों का प्रयोग बढ़ा है, इससे भाषा में सही व्याकरण और शुद्धता बनाए रखना अब पहले जितना आसान नहीं रह गया है।

इस शोध-पत्र में हिंदी में सामाजिक मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। हिंदी की शुद्धता, व्याकरण और मानक रूप पर प्रश्न उठ रहे हैं, लेकिन सामाजिक मीडिया ने इसे व्यापक जनसंख्या तक पहुँचाकर इसके प्रचार-प्रसार को सशक्त बनाया है। युवा वर्ग ने भाषा का प्रयोग करने का नया तरीका बनाया है, जो इसे अधिक जीवंत और गतिशील बनाता है।

यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक मीडिया ने हिंदी भाषा को सरल, लोकप्रिय और सुलभ बनाया है, किंतु इसके साथ ही भाषा की मर्यादा बनाए रखने की आवश्यकता भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सामाजिक मीडिया हिंदी भाषा के लिए चुनौती और संभावना—दोनों प्रस्तुत करता है।

KEYWORDS:

सामाजिक मीडिया, हिंदी भाषा, भाषा परिवर्तन, डिजिटल संचार, समकालीन समाज।

भूमिका

भाषा मानव समाज की सबसे मौलिक, अनिवार्य और प्रभावशाली आवश्यकता है। भाषा के बिना मानव सभ्यता की कल्पना नहीं की जा सकती। मनुष्य अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों, ज्ञान और सामाजिक चेतना को भाषा के माध्यम से ही व्यक्त करता है। भाषा केवल संवाद का साधन नहीं है, बल्कि वह संस्कृति, परंपरा, इतिहास और सामाजिक मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम भी है। किसी भी समाज की पहचान उसकी भाषा से होती है, क्योंकि भाषा के भीतर उस समाज की सोच, उसकी मानसिकता, उसकी संवेदनाएँ और उसका सांस्कृतिक आत्मबोध निहित होता है।

भाषा एक स्थिर इकाई नहीं है। जैसे-जैसे समाज में परिवर्तन होते हैं, वैसे-वैसे भाषा भी बदलती रहती है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और तकनीकी परिवर्तनों का प्रभाव भाषा के स्वरूप, शब्दावली, शैली और प्रयोग पर पड़ता है। इतिहास साक्षी है कि हर युग में भाषा ने समय की आवश्यकताओं के अनुसार नए रूप ग्रहण किए हैं। वर्तमान युग को यदि तकनीकी और डिजिटल युग कहा जाए तो यह अनुचित नहीं होगा। इस युग में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को गहराई से प्रभावित किया है।

तकनीक के इसी विकास का सबसे सशक्त और व्यापक रूप सामाजिक मीडिया के रूप में सामने आया है। सामाजिक मीडिया ने न केवल मनुष्य की जीवन-शैली को बदला है, बल्कि उसके सोचने, समझने और संवाद करने के तरीकों में भी परिवर्तन किया है। इस परिवर्तन का सबसे गहरा प्रभाव भाषा पर पड़ा है। आज भाषा पारंपरिक सीमाओं से बाहर निकलकर डिजिटल मंचों पर नए रूपों में अभिव्यक्त हो रही है।

हिंदी भाषा, जो भारत की एक प्रमुख संपर्क भाषा और सांस्कृतिक पहचान की वाहक है, सामाजिक मीडिया के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित हुई है। अब हिंदी केवल साहित्य, शैक्षणिक लेखन या औपचारिक संचार तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह डिजिटल संवाद की एक सशक्त भाषा बन चुकी है। इसी संदर्भ में सामाजिक मीडिया का भाषा पर प्रभाव एक गंभीर, समसामयिक और शोध-योग्य विषय बन जाता है।

सामाजिक मीडिया ऐसे डिजिटल मंच हैं, जहाँ उपयोगकर्ता केवल सूचनाओं का उपभोग ही नहीं करते, बल्कि स्वयं भी सक्रिय रूप से विषय-वस्तु का निर्माण और प्रसार करते हैं। यही सहभागिता सामाजिक

मीडिया की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। फेसबुक, व्हाट्सऐप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब और एक्स जैसे मंचों ने संवाद की प्रक्रिया को अत्यंत तीव्र और सरल बना दिया है। अब संवाद न तो स्थान से बंधा है और न ही समय से।

इस त्वरित संवाद प्रक्रिया ने भाषा को भी तीव्र, संक्षिप्त और सहज बना दिया है। सामाजिक मीडिया पर भाषा का प्रयोग अधिकतर अनौपचारिक होता है, जहाँ व्याकरणिक शुद्धता की अपेक्षा भावों की त्वरित अभिव्यक्ति अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है। इस प्रवृत्ति ने भाषा के पारंपरिक स्वरूप को चुनौती दी है, लेकिन साथ ही उसे अधिक जीवंत और जनसुलभ भी बनाया है।

हिंदी भाषा पर सामाजिक मीडिया का प्रभाव कई स्तरों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। शब्दावली के स्तर पर भाषा में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। अंग्रेज़ी और तकनीकी शब्दों का प्रयोग हिंदी के साथ व्यापक रूप से होने लगा है। इसके परिणामस्वरूप एक मिश्रित भाषा-रूप विकसित हुआ है, जिसे सामान्यतः 'हिंग्लिश' कहा जाता है। यह भाषा-रूप विशेष रूप से युवा वर्ग और शहरी समाज में अत्यंत लोकप्रिय हो गया है।

यह स्थिति एक ओर हिंदी को आधुनिक संदर्भों के अनुकूल बनाती है, वहीं दूसरी ओर शुद्ध हिंदी की परंपरा के लिए चुनौती भी प्रस्तुत करती है। किंतु यह भी सत्य है कि भाषा का जीवंत रहना उसके परिवर्तनशील स्वभाव पर निर्भर करता है। सामाजिक मीडिया ने हिंदी को नए शब्द, नए भाव और नई अभिव्यक्तियाँ प्रदान की हैं।

सामाजिक मीडिया के प्रभाव से हिंदी भाषा की लिपि में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। रोमन लिपि में हिंदी लिखने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। मोबाइल फोन और डिजिटल उपकरणों पर रोमन लिपि का प्रयोग सरल माना जाता है, जिसके कारण लोग देवनागरी के स्थान पर रोमन हिंदी का उपयोग करने लगे हैं।

इस प्रवृत्ति से एक ओर हिंदी का वैश्विक प्रसार हुआ है और उन लोगों को भी हिंदी से जोड़ने में सहायता मिली है, जो देवनागरी लिपि से परिचित नहीं हैं। वहीं दूसरी ओर देवनागरी लिपि के संरक्षण और मानक हिंदी लेखन के लिए यह एक गंभीर चिंता का विषय भी है। आवश्यकता इस बात की है कि तकनीकी सुविधा और भाषाई परंपरा के बीच संतुलन बनाए रखा जाए।

सामाजिक मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को अभूतपूर्व विस्तार दिया है। आज कोई भी व्यक्ति बिना किसी सामाजिक, आर्थिक या भौगोलिक बाधा के अपने विचार सार्वजनिक रूप से व्यक्त कर सकता है। इससे भाषा का लोकतंत्रीकरण हुआ है। जहाँ पहले लेखन और सार्वजनिक अभिव्यक्ति कुछ सीमित वर्गों तक ही सिमटी हुई थी, वहीं आज सामान्य नागरिक भी भाषा के माध्यम से सामाजिक विमर्श में भाग ले रहा है।

यह प्रवृत्ति हिंदी भाषा के लिए अत्यंत सकारात्मक है। इससे हिंदी का प्रयोग समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचा है और भाषा अधिक समावेशी बनी है। सामाजिक मीडिया ने हिंदी को जनभाषा के रूप में पुनः प्रतिष्ठित किया है।

सामाजिक मीडिया ने हिंदी भाषा की रचनात्मक संभावनाओं को भी व्यापक विस्तार दिया है। लघु कविताएँ, माइक्रो-कथाएँ, सूक्तियाँ, विचारात्मक पोस्ट, व्यंग्य और मीम जैसे नए रचनात्मक रूप सामने आए हैं। इन रचनाओं में भाषा संक्षिप्त होती है, किंतु भावात्मक प्रभाव अत्यंत गहरा होता है। विशेष रूप से युवा वर्ग इन माध्यमों के द्वारा हिंदी से जुड़ रहा है। यह स्थिति दर्शाती है कि सामाजिक मीडिया ने हिंदी भाषा में नवीनता, सृजनशीलता और गतिशीलता का संचार किया है।

शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक मीडिया का प्रभाव दोहरा दिखाई देता है। एक ओर यह छात्रों के लिए सीखने, विचार साझा करने और संवाद करने का नया मंच प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक मीडिया की अनौपचारिक भाषा शैक्षणिक लेखन को प्रभावित भी कर रही है।

कई छात्र सामाजिक मीडिया की भाषा-शैली को अपने उत्तर-पुस्तिकाओं, असाइनमेंट और प्रस्तुतियों में अपनाने लगे हैं, जिससे औपचारिक और मानक हिंदी में त्रुटियाँ बढ़ रही हैं। इस स्थिति में शिक्षकों और शिक्षण संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि सामाजिक मीडिया का सही दिशा में उपयोग किया जाए, तो यह भाषा-शिक्षण का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

सामाजिक मीडिया के अत्यधिक प्रयोग से भाषा की शुद्धता, व्याकरण और वर्तनी के प्रति लापरवाही बढ़ी है। शीघ्रता में लिखे गए संदेशों में त्रुटियाँ सामान्य हो गई हैं और लोग उन्हें सुधारने की आवश्यकता महसूस नहीं करते। इससे भाषा का मानक स्वरूप धीरे-धीरे

प्रभावित होता जा रहा है। इसके अतिरिक्त, भाषा की गंभीरता और गहराई पर भी प्रभाव पड़ा है। विचारों की विस्तृत अभिव्यक्ति के स्थान पर संक्षिप्त और सतही अभिव्यक्तियाँ अधिक प्रचलित हो रही हैं। यह स्थिति साहित्यिक और अकादमिक हिंदी के लिए चिंताजनक है।

सामाजिक मीडिया ने भाषा और संस्कृति के बीच एक नया संबंध स्थापित किया है। हिंदी भाषा अब केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बना रही है। प्रवासी भारतीय सामाजिक मीडिया के माध्यम से हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति से जुड़े हुए हैं। इससे हिंदी की वैश्विक उपस्थिति सशक्त हो रही है।

भाषा के माध्यम से सांस्कृतिक विचारों, परंपराओं और सामाजिक मूल्यों का तीव्र आदान-प्रदान संभव हुआ है। यह स्थिति हिंदी भाषा को एक अंतरराष्ट्रीय संवाद-भाषा के रूप में विकसित होने का अवसर प्रदान करती है।

निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि सामाजिक मीडिया का हिंदी भाषा पर प्रभाव व्यापक, गहन और बहुआयामी है। इसने हिंदी भाषा को अधिक जनसुलभ, जीवंत और प्रभावी बनाया है तथा अभिव्यक्ति के नए अवसर प्रदान किए हैं। साथ ही, भाषा की शुद्धता, लिपि-संरक्षण और साहित्यिक गरिमा से जुड़ी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं।

सामाजिक मीडिया न तो पूर्णतः भाषा का विनाशक है और न ही केवल वरदान। इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि भाषा का उपयोग किस चेतना और जिम्मेदारी के साथ किया जाता है। यदि सामाजिक मीडिया का संतुलित और विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए, तो यह हिंदी भाषा के विकास, संरक्षण और वैश्विक प्रसार का सशक्त माध्यम सिद्ध हो सकता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि डिजिटल युग में हिंदी भाषा का भविष्य सामाजिक मीडिया से गहराई से जुड़ा है। भाषा की सहजता और शुद्धता के बीच संतुलन बनाए रखना ही हिंदी भाषा के स्थायी और समग्र विकास का मार्ग है।

संदर्भ सूची

1. Crystal, D. (2011). Internet linguistics: A student guide. Routledge.
2. Kaplan, A. M., & Haenlein, M. (2010). Users of the world, unite! The challenges and opportunities of social media. Business Horizons, 53(1), 59–68. https://doi.org/10.1016/j.bushor.2009.09.003
3. Boyd, D. M., & Ellison, N. B. (2007). Social network sites: Definition, history, and scholarship. Journal of Computer-Mediated Communication, 13(1), 210–230.
4. Thurlow, C., Lengel, L., & Tomic, A. (2004). Computer mediated communication: Social interaction and the Internet. Sage Publications.
5. शर्मा, रामस्वरूप. (2018). डिजिटल युग और हिंदी भाषा. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
6. कुमार, नरेश. (2020). सामाजिक मीडिया और हिंदी भाषा पर प्रभाव. हिंदी अध्ययन, 15(2), 45–52।
7. तिवारी, भोलानाथ. (2016). भाषा और समाज. वाराणसी: भारतीय ज्ञानपीठ।
8. शुक्ल, नामवर सिंह. (2014). साहित्य और समाज. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
9. मिश्र, विद्यानिवास. (2017). हिंदी भाषा की संरचना और विकास. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।